Volume: 4 Issue: 10 Pages: 135-139

सलाम आखिरी उपन्यास: बाल यौन शोषण की व्यथा-कथा

*[1] पारुल

*[1] पीएच.डी शोधार्थी, साहित्य अध्ययनपीठ, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली, दिल्ली, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 21/Sep/2025
Accepted: 22/Oct/2025

***Corresponding Author**
पारुल
पीएच.डी शोधार्थी, साहित्य अध्ययनपीठ, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली, दिल्ली, भारत।

सारांश:
बाल यौन शोषण वर्तमान समय की अत्यंत गंभीर सामाजिक समस्याओं में से एक है। यह एक आपराधिक कृत्य के साथ मानवता और नैतिकता के मूल्यों पर भी गहरा प्रहार है । जब किसी बच्चे के साथ निष्कपट अवस्था में यह घटना घटती है तो यह उसके शरीर को तो घायल करता ही है साथ ही उसे मानसिक तथा भावनात्मक चोट भी पहुँचाती है। मधु कंकरिया का बहुचर्चित उपन्यास 'सलाम आखिरी' वेश्या जीवन के यथार्थपूर्ण चित्रण के साथ बाल यौन शोषण जैसी सामाजिक विकृति के विभिन्न आयामों को भी सामने लाता है । प्रस्तुत आलेख में 'सलाम आखिरी' उपन्यास के माध्यम से बाल यौन शोषण के कारण, प्रक्रिया और परिणाम – तीनों आयामों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: बाल यौन शोषण, वेश्यावृत्ति, दुराचार, गरीबी, सर्वांगीण विकास, तनाव ।

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाली सुप्रसिद्ध लेखिका मधु कांकरिया का साहित्य एक अमूल्य निधि है। इन्होंने विभिन्न कहानी, उपन्यास तथा यात्रा-वृतांतों की रचना की है। यदि उनके उपन्यासों की बात की जाए तो निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि लेखिका ने इस विधा में भी विशेष उपलब्धि अर्जित की है । मधु कांकरिया द्वारा लिखित उपन्यास इस प्रकार हैं :- 'खुले गगन के लाल सितारे', 'सलाम आखिरी', 'पत्ताखोर', 'सेज पर संस्कृत' तथा 'सूखते चिनार'। बाल यौन शोषण की दृष्टि से इनका 'सलाम आख़िरी' उपन्यास उल्लेखनीय है। वर्ष 2002 में प्रकाशित 'सलाम आख़िरी' उपन्यास अठ्ठाइस उपशीर्षकों में विभाजित है। यह उपन्यास वेश्या जीवन पर आधारित है । इसमें वेश्यावृत्ति के आंतरिक पहलुओं को उजागर किया गया है। इसमें कई स्त्रियों की पीड़ादायक कथा बताई गई है, जिससे यह पता चलता है कि वे किन कारणों से इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने पर विवश होती हैं । इस कड़ी में छोटी उम्र की लड़कियों से संबंधित वेश्यावृत्ति के बारे में भी बताया गया है । ऐसे में बाल यौन शोषण की समस्या स्वत: उपज जाती है, जिसके विस्तृत आयामों पर यहाँ चर्चा की जाएगी।

'सलाम आख़िरी' उपन्यास में कई ऐसी बालिकाओं का प्रसंग आया है, जिसमें बाल्यकाल में यौन शोषण होने के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है। सर्वप्रथम यदि उपन्यास की पात्र मीना की बात करें तो उसने बहुत कम उम्र में इस यंत्रणा से भरे परिवेश में कदम रखा था। मीना बहुत कम उम्र में एक बच्ची की देख-रेख के काम के लिए कलकत्ता आती है। उस बच्ची का पिता मीना का यौन शोषण करता है। 'सलाम आखिरी' उपन्यास में मीना की इस यात्रा का मार्मिक चित्रण किया गया है । जब उपन्यास की मुख्य पात्र सुकीर्ति अड़तीस वर्षीय मीना से उसके जीवन के इस पहलू के बारे में जानने की इच्छा व्यक्त करती है तो वह कहती है, "तब तक मैं कुछ भी नहीं जानती थी। उस आदमी ने मुझे अपने साथ उसके कमरे में आने के लिए कहा। मैंने सोचा कि शायद मुझसे कोई भूल हो गई है । मैं पीछे-पीछे उसके साथ उसके कमरे में चली आई। मेरे भीतर घुसते ही उस हरामजादे ने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया तो मैं डरी कि कहीं मुझे पीट न दे फिर भी मैं नहीं समझी कि यह बुलावा मेरी बर्बादी का बुलावा था । उसके बाद उसने मुझे एक टॉफी दी, ठीक वैसी ही टॉफी वह अपनी बच्ची के लिए भी प्राय: लाता था ।××× उसने कहा, हाँ, कल ही तुम्हारे जाने की व्यवस्था करता हूँ बस तुम थोड़ी देर लेट जाओ और साथ में ही उसने मुझे आहिस्ता से बिस्तर पर धकेल दिया। नहीं समझते हुए भी मुझे लगा कि यह सब ठीक नहीं हो रहा है। पहली लाज मुझे उसी समय लगी थी ।" [1] ये पंक्तियाँ दिखाती हैं कि किस प्रकार वह व्यक्ति मीना की मासूमियत का गलत फायदा उठा कर

उसका शोषण करता है। वह उसे 'टॉफी' का लोभ देकर उसे बरगलाना चाहता है । इतना ही नहीं जब वह बच्ची दर्द से रोने लगती है तो वह उस पर बल प्रयोग भी करता है, "मैं माँ-दुर्गा, माँ-दुर्गा का जाप करती रही और वह मुझे लूटता रहा। मेरे मुँह से सिसकारी निकली तो उसने थप्पड़ मारकर मुझे चुप करा दिया। बाद में हथेलियों से मुँह छिपाकर जब मैं रोने लगी तो उसने हँसते हुए कहा, "कुछ नहीं, बस एक खेल खेला है, शहरों का खेल ऐसा ही होता है ।" [2] उपरोक्त पंक्तियों में 'शहरों का खेल' के नाम पर मीना के साथ हुए जघन्य अपराध को देखा जा सकता है। कई मामलों में अपराधी अपने वास्तविक उद्देश्य को छिपाते हुए इसे 'खेल' जैसा नाम देते हैं । उनके ऐसा करने से बच्चे का विश्वास ठगा जाता है । हालांकि मीना इस बात को जान चुकी थी कि वह खेल नहीं है और उसके साथ अनुचित व्यवहार किया जा रहा है।

बाल यौन शोषण एक ऐसा अपराध है, जो अक्सर एक बार नहीं बल्कि लगातार घटता रहता है । ऐसा अधिकतर तब होता है जब शोषक की पहुँच बच्चे तक आसानी से होती है। चूँकि मीना उम्र में इतनी छोटी थी कि वह स्वयं अपने घर वापस लौटने में असमर्थ थी इसलिए वह व्यक्ति चिंता मुक्त हो कर अनेक बार उसका यौन उत्पीड़न करता है, "फिर तो प्राय: हर रात उसकी लड़की बगल के कमरे में सोई रहती, रसोई बनानेवाली जा चुकी रहती, तो वह मेरे साथ यही शहरी खेल खेलता, मैं रोती, विरोध करती तो वह मुझे धमकाता कि किसी को भी कहा तो चोरी करने के आरोप में पुलिस को पकड़वा दूँगा ।" [3] इस उद्धरण में यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार मीना प्राय: हर रात अपने मालिक से शोषित होती रही थी। उसके मालिक ने पहले शोषण को खेल का नाम दिया और जब मीना को असहज पाया तो डरा-धमका कर उसके साथ दुराचार करता रहा। छोटे बच्चों को जब घर में काम पर रखा जाता है तब उनके साथ दुर्व्यवहार होने की संभावना बढ़ जाती है। इस उपन्यास में शोषक चोरी के अपराध में पुलिस से शिकायत करने के भय को सहारा बनाकर उसके साथ यौन उत्पीड़न करता है।

जब मीना साहस कर अपनी स्थिति से संघर्ष करने का प्रयत्न करती है तब वह एक अन्य बाहरी व्यक्ति के चंगुल में फंस जाती है । यह प्रसंग इस प्रकार है, "एक रात उसे तेज बुखार था, बस इसी का फायदा उठाकर मैं हिम्मत करके घर से भाग गई। मुझे तब तक यह भी नहीं पता था कि हर जगह के लिए अलग-अलग टिरेन होती है।××× लेकिन मेरे पास टिकट नहीं था और न ही पैसे, इस कारण टी.टी. को देखते ही मेरी हवा निकलने लगी। मैं धार-धार रोने लगी। वहीं पर बैठे एक मुसाफिर ने मुझे टी.टी. से बचा लिया और अपने घर ले गया । मैंने उसे सारी आपबीती सुना दी। बाद में मुझे पता चला कि वह रेलवे कर्मचारी था एवं जहाँ वह मुझे ले गया वह रेलवे क्वार्टर था । एक रात उस नामर्दे ने अपनी जाति बता ही दी और मुझपर किरपा करने की कीमत वसूल ली। उसके बाद उसने मुझसे कहा, "अब कोई भी लड़का तुमसे शादी नहीं करेगा, क्योंकि पंद्रह वर्ष की उम्र में ही तुम वेश्या हो गई हो। अच्छा है, ई सब तुम पैसे कमाने के लिए करो और छ: महीने तक मुझे पूरी तरह से भोग-भागकर, अघाकर एक रात वह भी मुझे इन्हीं अँधेरी गलियों में बेच गया ।" [4] लेखिका ने यहाँ दिखाया है कि किस प्रकार शोषक मानसिकता के लोग बच्चों के हमदर्द बन कर उनका विश्वास अर्जित करते हैं तथा उनके अनुकूल सही समय आने पर अपनी वास्तविक मंशा पूरी करते हैं । उस मुसाफिर ने भी मीना की सहायता कर उसकी आपबीती जानने के पश्चात् यह अनुमान लगा लिया था कि इस बच्ची का शोषण आसानी से किया जा सकता है । वह न तो अपने घर वापस जा सकती है और न ही कड़ा विरोध कर सकती है। केवल इतना ही नहीं बल्कि उसने मीना के मन में यह धारणा भी बैठा दी थी कि न ही उसका विवाह हो पाएगा और न ही वह किसी के योग्य रह गई है। वह उसे पंद्रह वर्ष की उम्र में ही वेश्यालय में बेच देता है। बार-बार हुए यौन शोषण के फलस्वरूप तन व मन से घायल होने के कारण वह हार मान कर वेश्यावृत्ति को अपनी नियति मान लेती है, "मैं चाहती तो भाग सकती थी, पर तब तक मैं भागते-भागते बहुत थक गई थी।××× पूरी तरह निराशा और अन्धकार में डूबा मेरा मन समझ चुका था कि ई हरामखोर दुनिया से मुझे अब कुछ मिलना नहीं है । यहाँ सभी मर्द हरामी हैं। यहाँ सबकी लँगोटी में दाग है। ऊ मेरी जिन्दगी का पहला ऐसा बड़ा दु:ख था जिसे मैंने मन से कबूल कर लिया था और उसके बाद मैं खुद अपनी मालकिन बन गई। अपने माँ-बाबा को धियान कर उनसे मन ही मन माफी माँगकर मैंने अपनी, नई बनी चकले की मालकिन द्वारा दी गई नई साड़ी पहन ली और वेश्यावृत्ति कबूल कर ली ।" [5] मीना के प्रसंग से बाल यौन शोषण के वेश्यावृत्ति से जुड़े आयाम पर प्रकाश पड़ता है। सम्पूर्ण प्रसंग के अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि लेखिका ने बाल वेश्यावृत्ति की समस्या को बखूबी उठाया है।

यदि मीना के यौन शोषण होने के कारण पर प्रकाश डाला जाए तो गरीबी इसका मुख्य कारण दिखाई पड़ती है। यदि उसके परिवार में गरीबी नहीं होती तो वह न ही घर से बाहर काम करने जाती और न ही यौन शोषण का शिकार बनती। सुकीर्ति जब मीना के वेश्यावृत्ति अपनाने के कारण के बारे में पूछती है तो वह कहती है, "बंगाल के तलहटी गाँव में हम चार बहनें और तीन भाई थे। मैं सबसे बड़ी, हाथ को ऊँचा कर बताती है, कितनी बड़ी, तकरीबन – साढ़े दस-ग्यारह वर्ष की ।××× घर में सदैव चिक-चिक मची रहती। हर चीज का टोटा-आए दिन मार-पीट । चौबीस घंटे की हाय ! हाय ! खानेवाले इतने जन और कमानेवाला सिर्फ बाप ।××× कुछ दिन मैं घर पर ही रही कि तभी एक जनानी आई, उसने कहा कि मैं तुम्हें ऐसा काम दिलवा दूँगी, जिसमें तुम्हें कम-से-कम खटनी पड़ेगी । पगार और खुराकी भी अच्छी मिलेगी, बस तुम्हें एक पाँच-छ: बरस की एक बच्ची की देखभाल करनी होगी । लेकिन इसके लिए तुम्हें कलकत्ता रहना होगा ।" [6] ऊपर उद्धृत पंक्तियों से मीना की आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है । अपने परिवार की कमज़ोर आर्थिक स्थिति के कारण वह कलकत्ता में एक बच्ची की देख-रेख का काम करने लगती है, वहीं उसके साथ यौन शोषण की घटना घट जाती है ।

कारण के पश्चात यदि प्रभाव की बात की जाए तो मीना के शोषित होने के बाद उसका जीवन वेश्यावृत्ति की अँधेरी गलियों की ओर मुड़ जाता है । जब बच्चा एक बार यौन शोषण का शिकार बन जाता है तब वह बार-बार विभिन्न प्रकार के शोषण का शिकार बनता रहता है । मीना किस प्रकार वेश्या बनने के लिए विवश होती है यह देखा जा सकता है। कम उम्र में बच्चों को अपने घर लौटने का रास्ता भी नहीं पता होता। मीना घर वापसी के प्रयास में किस प्रकार पुन: शोषित हो जाती है यह ऊपर दिखाया जा चुका है । इसके परिणामवश अधिकतर बच्चे यथास्थिति को स्वीकार कर लेते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि बाल यौन शोषण का एक दुष्प्रभाव वेश्यावृत्ति भी है, जिसकी ओर ध्यान देना बेहद जरूरी है।

मीना की कथा के पश्चात उसी के अधीन कार्य करने वाली नलिनी अपनी आपबीती सुकीर्ति से साझा करती है। जहाँ एक तरफ़ मीना के साथ डरा-धमका कर यौन शोषण किया गया था, वहीं नलिनी को लोभ-लालच से षड्यंत्रपूर्ण ढंग से उत्पीड़ित किया जाता है। सलाम आख़िरी उपन्यास में नलिनी का प्रसंग इस प्रकार दिया गया है, "गाँव के ही एक चटाई मार्का स्कूल में चार कक्षाओं तक पढ़ी हुई थी। वहीं पर एक बड़ी उम्र का मर्द मुझे कभी बिन्दी, कभी लिपस्टिक, कभी चॉकलेट, कभी पायल आदि देता रहता था।××× मेरे कमजोर घर के अन्दरूनी हालत को भी वह घाघ बहुत जल्दी ही जान गया था । छः महीने होते न होते मुझे लगा, उस जैसा भलामानुस संसार में दूसरा नहीं।××× उन्हीं दिनों उसने मुझे एक फिलिम दिखाई... लभ से लबालब... जिसमें हीरोइन लभ के खातिर अपने गाँव के परेमी के साथ भाग खड़ी होती है । उसने उसी शाम मेरा चुम्मा लेते हुए कहा, 'चल भाग चलें ।'××× "आखिर फिलिम की हीरोइन की तरह मैं घर से

भागने को राजी हो गई । वे जोबनवा की दीवानगी के दिन थे।××× मैंने हिम्मत बटोरी, माँ दुर्गा का नाम लिया और उसके कहे अनुसार एक पेटी में थोड़ा सा जरूरी सामान भर वीरगंज से भागकर सीधे स्टेशन पर पहुँच गई ।××× फिर मुझे लेकर वह सीधा कलकत्ता आया और वहीं आते समय मेरे लिए लालपाड़ की एक नई साड़ी खरीदी।××× माँग में सिन्दूर डाला ।××× कुछ दिन हम मर्द-घरवाली की तरह रहे ।" ××× ऐसी कुछेक मस्त और रंगीन रातें बीतीं न बीतीं कि वह उदास रहने लगा । मैंने पूछा तो एक रात वह जिन्दगी का, खर्चे-पानी का रोना लेकर बैठ गया ।××× मैं रो पड़ी । मुझे दिलासा देता, बाँहों में भरते हुए वह कहने लगा, 'तुम्हारे लिए ही तो वह सब कर रहा हूँ, वरना गाँव में मेरे पास क्या नहीं था, खैर, तुझे मैं थोड़े दिन के लिए अपनी मामी के यहाँ छोड़ देता हूँ, बहुत ख्याल रखेगी वह तेरा...' ठीक यही शब्द थे उस भौंसड़ी के... के और वह मुझे बहुबाजार के किसी चकले में बेच गया ।" [7] यह केवल किसी की व्यक्तिगत वेदना का वर्णन नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक यथार्थ को दर्शाती है जहाँ बालिकाएं धोखे, लालच और शोषण का शिकार बनती हैं । नलिनी की कथा से यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार बहला-फुसला कर षड़यंत्र के माध्यम से नलिनी से उम्र में बड़ा व्यक्ति उसका यौन शोषण करता है और उसे वेश्यावृत्ति की ओर धकेल कर चला जाता है। इससे यह कहा जा सकता है कि बाल यौन शोषण एक दंडनीय अपराध के साथ मानवीय संवेदना, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों पर भी गहरा आघात पहुंचाता है। नलिनी के इस प्रकार शोषित होने तथा वेश्या बन जाने के कारण की तलाश की जाए तो लेखिका ने कमजोर आर्थिक स्थिति की ओर ही संकेत किया है । मीना की ही भांति नलिनी भी ऐसे परिवेश से आती है, जहाँ उसका जीवन अभावों से भरा हुआ था। नलिनी के ही शब्दों में, "मेरे माँ-बाप दोनों खेती में काम करते थे। छह भाई-बहन हैं हम लोग। आज भी देख सकती हूँ अम्मा को रोटियाँ गिनते हुए और हिसाब लगाते हुए। सारा दिन अम्मा का यही सोचते-सोचते बीतता कि शाम किस प्रकार गुजरेगी, सूखी या भूखी । कहीं से भी काम मिल जाने की आशा में अम्मा हरेक रास्ते आते-जाते से हँस-हँसकर बतियाती रहती थी, जिस कारण अक्सर पिता उन्हें पीट दिया करते थे।" [8] नलिनी की दुर्बल पारिवारिक स्थिति उपरोक्त पंक्तियों में स्पष्ट दिखाई देती है। इस तरह की आर्थिक स्थिति तथा अधिक पारिवारिक सदस्यों में माता-पिता बच्चों पर अधिक ध्यान नहीं दे पाते । शोषक नलिनी की स्थिति से भलीभाँति परिचित था। वह नलिनी को बहला-फुसला कर, विवाह का ढोंग कर उसे वेश्यालय में बेच देता है । किशोरावस्था में बच्चे बाहरी आकर्षण से आकर्षित होने के कारण षड़यंत्र को भांप नहीं पाते और शोषित हो जाते हैं।

'सलाम आखिरी' उपन्यास अनेक ऐसे प्रसंग समाज के सामने लाता है, जिनमें अठारह वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को जबरन वेश्या बनाया जाता है । बांग्लादेश से लाई गई सत्रह वर्ष की अफसाना और ग्यारह वर्ष की आएशा की कथा कुछ इसी प्रकार की है, "पिछले बृहस्पतिवार को बांग्लादेश की दो लड़कियाँ, अफसाना और आएशा को उसकी खाला कलकत्ता घुमाने के बहाने ले आई थी। अफसाना सत्रह वर्ष की थी और आएशा महज ग्यारह वर्ष की।××× यहाँ कलकत्ता आकर उसकी खाला ने अफसाना को तो हाथोहाथ किसी चकलेवाली को बेच दिया । अफसान को उसने कहा, 'तुम यहाँ रहो, ये मेरी बुआ सास हैं, मैं कुछ ही देर में आती हूँ।'××× कुछ देर घुमक्कड़ी करके आएशा को वह किसी दूसरी वेश्या के पास रखवा गई। आएशा को उसने कहा कि वह कुछ ही घंटों में आकर उसे ले जाएगी ।" [9] हालांकि अफसाना और आएशा दोनों बहनों को इन्द्राणी पुलिस की सहायता से बचा लेती है। लेकिन फिर भी इनकी कथा इसीलिए उल्लेखनीय हो जाती है क्योंकि इसमें उनकी अपनी खाला (मौसी) ही उन्हें वेश्यालय में बेचती है। अपनों के द्वारा ही इस प्रकार विश्वासघात सहना कितना कष्टदायक होता है, इसका अनुमान लगाया जा सकता है ।

मधु कांकरिया स्पष्ट रूप से बाल यौन शोषण तथा वेश्यावृत्ति का प्रमुख कारण गरीबी को मानती हैं। वे उपन्यास में इन्द्राणी और सुकीर्ति के मध्य हुई बातों के माध्यम से यह विचार प्रकट करती हैं, "मैंने कई जगह पढ़ा है, कईयों से सुना भी है कि बहुत सी वेश्याओं का प्रथम यौन शोषण अपने ही एकदम नजदीकी रिश्तेदारों, मसलन भाई या पिता द्वारा ही हुआ... उन्होंने ही पहुँचा दिया उन्हें इस रास्ते... अखबारों में भी ऐसी घटनाएँ कई बार पढ़ीं... लेकिन फिर भी गले नहीं उतरती...। "हाँ, कई घटनाएँ ऐसी भी आई हैं, जहाँ पिता ने ही पुत्री के साथ... लेकिन सौभाग्य से ये घटनाएँ उतनी संख्या में नहीं और जो घटी भी हैं वे बेहद नीचे तबके के लोगों के बीच घटी हैं । अभी कुछ दिन पहले ही जो घटना प्रकाश में आई थी, उसमें पिता एक कारखाने में मजदूर था। एक छोटी सी खपरैल की झोंपड़ी में पिता अपनी दो युवा पुत्रियों के साथ रहता था । वहीं नहाना, वहीं कपड़े बदलना, वहीं सोना... अरे, इनके जैसा जीवन हम और आप एक दिन भी नहीं जी पाएँगी। अधिकांश परिवारों में खटिया के ऊपर माँ-बाप या भाई-भौजाई और खटिया के नीचे कुँवारी बहन, किशोर बच्चे समय पूर्व ही पकते रहते हैं । बस बत्ती बुझाकर अपनी आँखों की थोड़ी बहुत शर्म बचा ली जाती है ।" [10] अभावों से भरे परिवेश में बच्चों का सर्वांगीण विकास बाधित हो जाता है । ऐसे परिवेश में रहने की जगह प्राय: सीमित होने के कारण निजता का अभाव बना रहता है । ऐसे में कई बार बच्चे वयस्कों के निजी क्षणों के साक्षी बन जाते हैं । इस प्रकार के अनुभव उनके मन-मस्तिष्क के विकास के लिए घातक सिद्ध होते हैं। ऐसे असुरक्षित वातावरण में बच्चे के शोषित होने की संभावना बढ़ जाती है। इन्द्राणी आगे कहती है, "हाँ, तो जो वाकया मैं बता रही थी उसमें कारखाने में मजदूरी करते श्रमिक की पत्नी की भी बहुत पहले मृत्यु हो चुकी थी। एक ही कमरे में रहने की मजबूरी में पिता-पुत्रियों के बीच शर्म-हया यूँ भी बहुत हद तक निकल चुकी थी । दिन-भर की हाड़तोड़ मेहनत और कारखाने की उबाऊ, अँधेरे और हर पल अपमानित करते रहनेवाले माहौल में पिता के जीवन में ऐसा कुछ भी तो नहीं था जो उसके थके मन और बुझी आत्मा को जानवर होने से बचा सके।××× जिन्दगी ने चूस-चूसकर हर प्रकार के नैतिक-बोध की हवा निकाल दी थी । घर अभावों का भयंकर जंगल । पिता-पुत्री में पैसों को लेकर अक्सर भयंकर झगड़े एवं मारपीट तक हो जाती । सम्बन्धों की भूमि पूरी तरह तड़की हुई । ऐसे में ही एक रात देशी दारू के नशे में उसने उसी झोंपड़ी में कपड़े बदलते पुत्री को देख लिया... और टूट पड़ा। तो सुकीर्ति जी, ऐसी घटनाओं के मूल में है जिन्दगी की भयंकर बेचारगी, दारुण अभाव एवं हर प्रकार की विकल्पहीनता ।" [11] इस प्रसंग में लेखिका ने जर्जर आर्थिक स्थिति के परिवेश में पिता द्वारा पुत्री के यौन शोषण की कथा पर प्रकाश डाला है । मजदूर पिता यंत्र की भाँति बाहर काम करने से मानसिक और शारीरिक तनाव से ग्रस्त रहता था। ऐसे में बच्ची को कपड़े बदलता देख वह रिश्तों की सीमाओं को लांघ देता है । अंतत: यह कहा जा सकता है कि निर्धनता मनुष्य के जीवन से नैतिक बोध को भी लुप्त कर देती है । इसके परिणामस्वरूप इस तरह की घटनाएं सामने आती हैं।

इस उपन्यास में लेखिका ने वेश्यावृत्ति के दुष्प्रभाव के रूप में यह दर्शाया है कि इस समस्या से जूझ रही स्त्रियों का जीवन तो वेश्या बन कर कटता-खपता ही है परंतु उनकी संतान विशेष रूप से लड़कियाँ भी यौन शोषण का शिकार होने से नहीं बच पाती हैं। इसके फलस्वरूप वे भी वेश्या बनने पर विवश हो जाती हैं, "कालीघाट में जिस समय सुकीर्ति वेश्या माया देवनार से मिली थी, क्या उसने कभी स्वप्न में भी सोचा था कि उसके जीवन की ढलान इतनी तेजी से शुरू होनेवाली है ?××× माया ने अपनी लड़की को अपने इस कलंकित जीवन की छाँव से भी दूर अपने गाँव में अपनी बहन के पास रख छोड़ा था।××× ग्यारह-बारह वर्ष की कच्ची किसलय बालिकाओं को पानी के टब में बिठा-बिठाकर समय पूर्व ही अप्राकृतिक रूप से

सम्भोग के लायक बनानेवाली माया का खून उस समय खौल गया था, भीतर आँधियाँ चलने लगी थीं जब उसने हठात् सुना कि उसकी अनुपस्थिति में किसी ने उसी की चौदह वर्षीया पुत्री को वेश्या बना डाला ।" [12] माया अपनी बेटी को इस परिवेश की छत्रछाया से दूर रख कर भी इसके दुष्प्रभाव से नहीं बचा पाती । उसकी चौदह वर्ष की पुत्री का यौन उत्पीड़न उसी के ही एक पुराने ग्राहक द्वारा किया जाता है । इससे यह समझा जा सकता है कि एक बार वेश्या बन जाने के बाद उस स्त्री का शेष जीवन एक यंत्रणा के समान बीतता है। जाने-अनजाने उसकी संतान भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाती।

यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि एक बार यौन शोषण हो जाने के बाद ये वेश्याएँ इस परिस्थिति से संघर्ष क्यों नहीं करती? क्यों इससे बाहर निकलने का प्रयास करती? वे वेश्यावृत्ति को ही अपनी नियति क्यों मान लेती हैं? इन प्रश्नों का उत्तर उपन्यास में ही मिल जाता है । उपन्यास के बोंसाई और वेश्या प्रसंग में लेखिका ने वेश्याओं की तुलना बोंसाई से की है, "जापान एवं चीन से आई है यह पद्धति या कला । इसके द्वारा पेड़ की मुख्य जड़ को काटकर उसे धागे से बाँध दिया जाता है । इन्हें कम धूप, कम पानी देकर इनके पूर्ण विकास एवं विस्तार को अवरुद्ध कर दिया जाता है जिससे कि इनका फैलाव गमले की परिधि तक ही सीमित रहे। इन वेश्याओं के अवरुद्ध मानसिक विकास को देखकर सुकीर्ति को उसी बोंसाई पद्धति की याद आ गई थी । इन वेश्याओं में करीब नब्बे प्रतिशत वेश्याएँ बारह-तेरह वर्ष की उम्र में ही इस माहौल में आकर बन्द हो जाती हैं ।" [13] यहाँ लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि इन्हें इतनी कम उम्र में ऐसे दमघोंटू परिवेश में बांध कर रखा जाता है कि इनका सम्पूर्ण मानसिक विकास नहीं हो पाता । संभवत: इसी कारण वह अन्य लोगों की तुलना में कम चतुर होती हैं और अपने भविष्य के लिए सही निर्णय नहीं ले पाती हैं । इसी के साथ दूसरा कारण लेखिका ने समाज के विधान को बताया है । इन विधानों के चलते कूपमंडूक मानसिकता पनपती है और समाज के विकास को बाधित करती है, "स्त्री किसी की कामुकता का शिकार बन गई तो उसे 'झूठा' मान लिया जाता है । फिर उसके बाद उसके पास सिवाय वेश्यावृत्ति के कोई रास्ता भी नहीं बचता है । महाभारत के वनपर्व में रामोपाख्यान की इस उक्ति पर जरा गौर फरमाओ, "जैसे कुत्ते द्वारा चाटे गये घी का यज्ञ में व्यवहार नहीं होता, उसी तरह परहस्तगता नारी भी पति के भोग के लायक नहीं बचती ।" [14] उपरोक्त पंक्ति समाज की वास्तविक स्थिति को दर्शाती है । उपन्यास की पात्र मीना के प्रसंग में भी बलात्कार होने के बाद एक पुरुष द्वारा उसे भी यही 'सलाह' दी जाती है कि अब वह किसी अन्य व्यक्ति के लायक नहीं रह गई है । उसके लिए एक मात्र मार्ग वेश्यावृत्ति ही है। लेखिका ने समाज की इस प्रकार की रुग्ण मानसिकता पर प्रहार किया है ।

'सलाम आखिरी' उपन्यास में रेशमा नामक स्त्री को भी तेरह वर्ष की उम्र में वेश्या बनाया जाता है । वह एच.आई.वी. से पीड़ित होने पर प्रतिशोध की भावना से भर जाती है । वह सुकीर्ति से कहती है, "जानती हैं, मैं अभी सिर्फ चालीस वर्ष की हूँ, पर मेरा एच.आई.वी. पोजिटिव आया है ।"××× "पर उसके सुझाव के साथ ही रेशमी जैसे टाइम बम की तरह फूट पड़ी, मुझे नहीं करवाना अपना इलाज-विलाज । विनाश की इस सौगात को मैं बल्कि सँभालकर रख रही हूँ उस व्यक्ति के लिए जिसने मुझे रंडी बनाया – जिसने मुझे एक ही रास्ता दिखाया, जाँघों का रास्ता, वह भी तेरह वर्ष की उम्र में। मैं दिन-रात उसे ढूँढ रही हूँ ।"××× "वह जब तक नहीं मिलता मैं सम्पूर्ण पुरुष जाति से बदला लूँगी, उन सब पुरुषों को यह बीमारी दूँगी जो यहाँ आते हैं ।××× हम सड़-गल कर कीड़े-मकोड़े की तरह मरें और मर्द जो हमें वेश्या बनाते हैं, वे शान्ति की नींद सोएँ, यह नहीं हो सकता ।××× यह बदला उन सभी पुरुषों से है जो वेश्यालय को आबाद करते हैं ।" [15] सुकीर्ति जब रेशमा को अपना इलाज करवाने की सलाह देती है तब वह भड़क उठती है। उपरोक्त पंक्तियों में यह द्रष्टव्य है कि रेशमा उस व्यक्ति (जिसके कारण वह वेश्या बन जाती है) के साथ-साथ सम्पूर्ण पुरुष जाति के प्रति आक्रोश व्यक्त करती है। बाल्यावस्था में यौन शोषण के दुष्प्रभाव के रूप में यह देखा जाता है कि बच्चा उस पुरुष या स्त्री जाति विशेष से ही घृणा करने लगता है। लेखिका ने रेशमा के द्वारा वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देने वाले लोगों को चेताया है।

बाल यौन शोषण के घातक परिणाम के रूप में एक अन्य प्रसंग यहाँ उल्लेखनीय हो जाता है । यह प्रसंग एक चौदह वर्ष की बच्ची का है, जो भयानक शारीरिक व मानसिक पीड़ा से ग्रसित दिखाई गई है, "अभी मेदिनीपुर में मैं गई थी, महीने भर पहले वहाँ पर एक लड़की से मुलाकात हुई, मात्र चौदह वर्ष की, बाप रे पूरा शरीर उसका बुरी तरह घिनौना हो चुका है । एच.आई.वी. पॉजिटिव भीतर गहरे-गहरे घाव हैं, पूरी चमड़ी चरम रोग से दागदार बनी हुई –×××? कहते हैं कि कलकत्ता से उड़ाया गया था उसे, तब से सामूहिक बलात्कार होते-होते अब वह मानसिक रूप से भी पगला गई है । अपने शरीर का भी होश नहीं रहा है उसे और तो और डॉक्टर को देखते ही स्वयं को उघाड़ दिया उसने। भीतर मन में पुरुष मात्र के लिए इतना डर बैठ गया है उसमें कि उसे सब बलात्कारी ही नजर आते हैं ।" [16] इन पंक्तियों में उस लड़की की त्रासद स्थिति को अभिव्यक्त किया गया है। यौन शोषण की विभीषिका से उसके मन-मस्तिष्क पर पुरुष की ऐसी छाप पड़ी है कि हर 'पुरुष' में उसे अपराधी दिखाई पड़ता है । उपन्यास के इस मार्मिक प्रसंग में बाल यौन शोषण या यौन शोषण के घातक परिणाम दिखाए गए हैं, जिसमें शारीरिक व मानसिक दोनों शामिल हैं ।

अंतिम रूप से यह कहा जा सकता है कि 'सलाम आखिरी' उपन्यास वेश्या जीवन के अनेक भीतरी पहलुओं को संवेदनात्मक दृष्टि से देखे जाने की मांग करता है । इसमें न केवल वयस्क स्त्री बल्कि नाबालिग बच्चियों का जीवन भी नर्क तुल्य बन जाता है । मधु कांकरिया ने इन स्त्रियों के सीमित व कुरूप संसार की परतें समाज के सामने रखी हैं।

सन्दर्भ सूची:

1. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 35
2. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 35-36
3. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 36
4. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 36
5. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 36
6. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 33, 34
7. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या –38, 39,40
8. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 38
9. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 90
10. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 149
11. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 149
12. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 156, 155

13. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 133
14. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 135-136
15. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 185, 186, 187
16. कांकरिया, मधु. (2002, चौथा संस्करण – 2024). सलाम आख़िरी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 188